इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(2011–2020 तक विशेष संदर्भ में)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
लखनऊ की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–संक्षिप्तिका

शोध–निर्देशक
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य

शोधार्थी
कु० दीप्ति यादव
ना०सं०–999/19

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड
लखनऊ–226025 (उ.प्र.)

2022

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय : साहित्य का समाजशास्त्र

1.1 समाजशास्त्र का ऐतिहासिक विकास

1.2 साहित्य का समाजशास्त्र : भारतीय आयाम

1.3 साहित्य का समाजशास्त्र : वैश्विक पहलू

1.4 साहित्य का समाजशास्त्र : विविध दृष्टियाँ

द्वितीय अध्याय : उपन्यास का समाजशास्त्र

2.1 आजादी से पूर्व हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्र : एक अध्ययन

2.2 आजादी के बाद हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय परिदृश्य

2.3 भूमण्डलीकरण के बाद हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

2.4 हिन्दी उपन्यासों का विकासात्मक समाजशास्त्रीय परिदृश्य

तृतीय अध्याय : 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में विविध आयाम : समाजशास्त्रीय अध्ययन

3.1 'पारिजात' उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन

3.2 'अरण्य तंत्र' एवं 'फाँस' उपन्यास में निहित सामाजिक यथार्थ–बोध

3.3 'पागलखाना' उपन्यास में बाजारवादी संस्कृति का परिदृश्य

3.4 'एक कस्बे के नोट्स' उपन्यास में बदलता लोक एवं समाज

3.5 'निर्वासन' उपन्यास का सामाजिक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय : 21वीं सदी के विमर्शमूलक हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन

4.1 'ये आम रास्ता नहीं' एवं 'फरिश्ते निकले' उपन्यास में निहित स्त्री विमर्श

4.2 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास में अभिव्यक्त दलित विमर्श

4.3 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' एवं 'गायब होता देश' उपन्यास में व्यक्त आदिवासी विमर्श

4.4 'चार दरवेश' उपन्यास में निहित वृद्ध विमर्श

4.5 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास में निहित किन्नर विमर्श

पंचम अध्याय : 21वीं सदी के विवेच्य हिन्दी उपन्यासों का कथ्यगत एवं शिल्पगत विश्लेषण

5.1 कथ्यगत विश्लेषण

5.2 औपन्यासिक संरचना में शैलीगत परिवर्तन

5.2.1 वर्णनात्मक शैली

5.2.2 संवादात्मक शैली

5.2.3 पत्रात्मक शैली

5.2.4 व्यंग्यात्मक शैली

5.3 भाषिक विविधता

5.3.1 उर्दू, अरबी, फारसी शब्द

5.3.2 अंग्रेजी शब्द

5.3.3 संस्कृतनिष्ठ शब्द

5.3.4 जनजातीय, मराठी एवं स्थानीय शब्द

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध–संक्षिप्तिका

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। उसमें सदैव घनिष्टता देखी जाती है। सामाजिक सन्दर्भों से जुड़े बिना साहित्यकार साहित्य सृजन नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी साहित्यिक कृति केवल साहित्यकार की निजी–अनुभूतियों की सीमाओं में बँधकर नहीं रची जाती बल्कि प्रत्येक कृति किसी न किसी रूप में सामाजिक चेतना का अनुकरण होती है। साहित्यकार समाज से प्रभाव ग्रहण करता है और अपनी कल्पना के द्वारा उसके विविध रूपों को कलात्मक ढंग से यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करता है।

साहित्य के समाजशास्त्र में साहित्यिक कृतियों के सामाजिक सन्दर्भों की तलाश की जाती है। साहित्य की सामाजिक अस्मिता, साहित्य के समाजशास्त्र द्वारा निरूपित की जाती है। जिस प्रकार समाजशास्त्र मानव सम्बन्धों का अध्ययन करता है वैसे ही साहित्य का समाजशास्त्र, साहित्य के माध्यम से मानव सम्बन्धों की खोज करता है। साहित्य में समग्र मनुष्य की अभिव्यक्ति होती है, मानव मानस की जितनी भी गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ और चिन्ताएँ हैं उन सबकी अभिव्यक्ति साहित्य में होती है। साहित्य का अस्तित्व समाज से जुड़ा हुआ है क्योंकि भाषा के बिना कोई साहित्य नहीं हो सकता है। भाषा बुनियादी तौर पर सामाजिक होती है क्योंकि वह समाज में पैदा होती है, समाज में ही उसका विकास भी होता है और कभी–कभी सामाजिक प्रक्रिया में ही उसका ह्रास भी होता है। साहित्य

समाज से पैदा ही नहीं होता वह समाज के अनेक रूपों को प्रभावित भी करता है। साहित्य किसी समाज की सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक और प्रमाण भी होता है।

साहित्य के समाजशास्त्र की वास्तविक तलाश साहित्य की विविध विधाओं के समाजशास्त्रीय अध्ययन द्वारा की जाती है चूंकि उपन्यास को आधुनिक जीवन का महाकाव्य भी कहा गया है। स्पष्ट हो जाता है कि युग जीवन और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष या परिदृश्य को देखकर ही यह अवधारण बन जाती है। निश्चय ही उपन्यास समाज की जटिलता, उसकी विकास यात्रा, उसके विविध आरोहों, अवरोहों, उसकी चुनौतियों और समस्याओं के साथ मनुष्य के स्वाभाविक राग विराग, प्रेम–प्रतिरोध के महाख्यान की गद्य विधा के रूप में प्रतिष्ठित है, जिसमें मनुष्य के सामाजिक व्यवहार विरोध और परस्पर सम्बन्धों का विश्लेषण गहनता के किया जाता है।

21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त दृष्टि और संवेदना अपने सम्पूर्ण औपन्यासिक वैशिष्ट्य के कारण अपना विशेष महत्व रखती है। 21वीं सदी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि इन उपन्यासों में सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्थितियों की नवीन निष्पत्तियों के आलोक में मानव सम्बन्धों को समझने और उत्तर आधुनिक स्थितियों उपभोक्तावाद, बाजारवाद तथा

भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप आये विषम परिवर्तनों को सुलझाने का एक व्यापक प्रयास करते हैं।

समाजशास्त्रीय अध्ययन के दो दृष्टिकोण होते हैं पहला यह कि इसके अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धों दो या दो से अधिक व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की, चाहे व सहयोग के हों या संघर्ष के, उनसे उत्पन्न प्रभावों एवं उनके निर्माण की परिस्थितियों का अध्ययन करते हैं। दूसरा पक्ष यह कि कोई वस्तु या प्रघटना हमारे सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक मूल्यों, सामाजिक नियंत्रण को किस रूप में प्रभावित करती है। साथ ही जब बात समाजशास्त्रीय अध्ययन की होती है तो हमें ज्ञात होना चाहिए कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट दृष्टिकोण से सामाजिक प्रघटना का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत शोध विषय 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (2011–2020 तक विशेष सन्दर्भ में)' है। शोध विषय को विश्लेषित करने के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को मुख्यतः पाँच अध्याय में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय 'साहित्य का समाजशास्त्र' है। इसमें सबसे पहले साहित्य के स्वरूप को परिभाषित किया गया है। साहित्य और समाज के अन्तः सम्बन्धों की व्याख्या की गयी है। साहित्य की सामाजिक दृष्टि की विवेचना विविध विद्वानों द्वारा दी गयी सारगर्भित अवधारणाओं के माध्यम से स्पष्ट की गयी है। प्रत्येक साहित्यकार अपने समाज से किन स्तरों में प्रभाव ग्रहण करता है और उसे साहित्य के रूप

में निरूपित करता है आदि का विश्लेषण इस अध्याय के माध्यम से किया गया है।

साहित्य और समाजशास्त्र एक दूसरे से परस्पर सम्बद्ध होते हैं। जब भी समाज में कोई परिवर्तन आता है तो उसकी छवि लेखक के लेखन में अवश्य झलकती है। वही लेखन साहित्य और समाजशास्त्र का दस्तावेज बन जाता है। समाज में नित–नये परिवर्तन होते रहते हैं, इसी नाते तत्कालीन साहित्य का समाजशास्त्र समाज को एक नया मार्ग दिखाने का कार्य करता है। स्पष्ट है, पहले समाज निर्मित होता है बाद में साहित्य की प्रस्तुति होती है। साहित्य में समाज का सजीव रूप उद्घाटित होता है। इसलिए साहित्य समाज का जीवंत इतिहास है।

इसी अध्याय को चार उपअध्यायों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं– समाजशास्त्र का ऐतिहासिक विकास, साहित्य का समाजशास्त्रः भारतीय आयाम, साहित्य का समाजशास्त्रः वैश्विक परिदृश्य, साहित्य का समाजशास्त्र : विविध दृष्टियाँ। सर्वप्रथम समाजशास्त्र के उद्भव विकास और उसके स्वरूप को परिभाषित किया गया है और पाया गया कि समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है और व्यक्तियों तथा समूहों को अपने स्वयं के जीवन की दशाओं में परिवर्तन करने के अवसर भी प्रदान करता है। समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है जो व्यक्तित्व को विकसित

और परिपक्व बनाता है। यह मानव के सामाजिक जीवन को समझने के लिए महत्वपूर्ण विषय है।

साहित्य के समाजशास्त्र के भारतीय आयाम को विश्लेषित करने में प्रमुख भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतकों द्वारा दी गयी अवधारणाओं की व्याख्या की गई है। जिनमें डॉ. निर्मला जैन, रोमिला थापर, श्यामाचरण दुबे, डी.पी. मुखर्जी, पी.सी. जोशी, अक्षय कुमार देसाई, डी.डी. कौशाम्बी, मैनेजर पाण्डेय आदि ने अपनी–अपनी स्थापनाएँ प्रस्तुत की है। जिससे स्पष्ट होता है कि साहित्य के समाजशास्त्र के भारतीय आयाम में प्रमुख रूप से साहित्य, पाठक और रचनाकार है। जिसके माध्यम से समाज से साहित्य के सम्बन्ध की खोज और व्याख्या सही ढंग से होती है।

साहित्य के समाजशास्त्र के वैश्विक आयाम की समझने में इपालित तेन, लूसिए गोल्डमान, लियो लावेंथल और रेमण्ड विलियम्स आदि ने वैश्विक आयाम पर गम्भीरता से विचार किये हैं। इस अवधारणा को रौलेण्ड राबर्टसन ने बहुत अधिक विस्तार दिया है। तेन व्यक्ति के मानसिक निर्माण प्रक्रियाओं पर युग एवं परिवेश को महत्व देते हैं तो वही 'गोल्डमान' साहित्यिक कृति को सामाजिक समूह की चेतना का परिणाम मानते हैं तो कृतिकार की सृजनशीलता की अवहेलना हो जाती है। रेमण्ड विलियम्स अनुभूति की संरचना को महत्वपूर्ण मानते हैं।

साहित्य के समाजशास्त्र के अनुशीलन की विविध दृष्टियाँ सामने आयी हैं जिससे कृति की समाजशास्त्रीय अध्ययन में सुगमता हुई है। वर्तमान साहित्य के समाजशास्त्र के क्षेत्र में तीन दृष्टियाँ मुख्य रूप से सक्रिय हैं– साहित्य में समाज की खोज, समाज में साहित्य की सत्ता और साहित्यकार की स्थिति का विवेचन तथा साहित्य और पाठक के संबंध का विश्लेषण। इस प्रकार इस अध्याय के विवेचन के माध्यम से स्पष्ट होता है कि साहित्य के समाजशास्त्र का मुख्य लक्ष्य समाज से साहित्य के सम्बन्ध की खोज और उसकी व्याख्या करना है। सृजनात्मक साहित्य में समाज की क्या भूमिका होती है और रचना की जड़े समाज में कितनी गहराई तक समाई हुई है और रचना का उस युग पर क्या प्रभाव पड़ता है? आदि प्रश्नों का हल साहित्य के समाजशास्त्र द्वारा किया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि साहित्यिक रचना एक सामाजिक कर्म और कृति एक सामाजिक उत्पादन।

द्वितीय अध्याय 'उपन्यास का समाजशास्त्र' है। इसमें सबसे पहले उपन्यास के अर्थ स्वरूप को परिभाषित किया है। तत्पश्चात् उपन्यास के समाजशास्त्र का गहन विवेचन किया गया है। उपन्यास और समाजशास्त्र दोनों ही समाज से जुड़े होने के कारण समान स्तर रखते हैं। समाजशास्त्रीय पद्धति साहित्य के अध्ययन की सार्वभौमिक पद्धति के रूप में उपन्यास को विवेचित करती है। उपन्यास में निहित वस्तु, पात्र, भाषा–शैली, घटनायें, पर्यावरण विचारधारा आदि सभी समाज से ही

उद्घाटित होकर उपन्यास में लक्षित होते हैं। वास्तव में समाजशास्त्र और उपन्यास एक युग के समान भौतिक और वैचारिक परिवेश की उपज है।

इस अध्याय को मुख्यतः चार उप–अध्यायों–आजादी से पूर्व हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्र : एक अध्ययन, आजादी के बाद हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय परिदृश्य, में विभाजित किया गया है। भूमण्डलीकरण के बाद हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय परिदृश्य। इसके अन्तर्गत मैंने पाया कि आजादी से पहले के हिन्दी उपन्यासों में एक तरफ नीतिपरक, उपदेशयुक्त, सामाजिक– धार्मिक आचरण पर बल देने वाले उपन्यासों को प्रमुखता मिली तो दूसरी तरफ मनोरंजन प्रधान तिलस्मी–ऐय्यारी उपन्यास देखें गये जिनका जीवन की सच्चाइयों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। इसके परस्पर प्रेमचंद ने इस विधा का समय और समाज में व्याप्त सच्चाइयों से युक्त मौलिक प्रौढ़ और कलात्मक रूप प्रदान किया। 1877 ई. से लेकर 1947 ई. तक के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों का उल्लेख उनकी सामाजिकता के सन्दर्भों में करने का प्रयास किया गया है। उपन्यास परंपरा के केन्द्र बिन्दु के रूप में प्रेमचंद को देखा जा सकता है। समाज के उत्थान चाहे राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक सभी पक्षों पर प्रभाव डालने की अद्भुत क्षमता आरम्भिक उपन्यासों में विद्यमान थी।

आज़ादी के बाद सामाजिक स्थितियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देते हैं। समाज का प्रत्येक वर्ग अपने मन में नयी आकांक्षा व सपने को साकार करने के लिए पूरी तरह सक्रिय दिखाई देता है। आज़ादी के बाद

विभाजन की त्रासदी से उत्पन्न मध्यमवर्गीय सामाजिक स्थिति को व्याख्यायित करने के साथ–साथ आधुनिकता के प्रभाव से समाज में आये परिवर्तनों को भी विवेचित किया गया है। आधुनिक भाव–बोध से सम्पृक्त शिक्षा, संस्कृति व नये–जीवन मूल्यों से प्रभावित प्रमुख हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय पद्धति से संक्षेप में अध्ययन किया गया है। इसी क्रम में विभाजन पर आधारित एवं मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

1990 के दशक में भारत में भूमंडलीकरण की शुरूआत मानी गयी है। यह एक ऐसी विश्वस्तरीय प्रक्रिया है जिससे दुनिया का हर क्षेत्र, शिक्षा, संस्कृति, आचार–व्यवहार, अर्थव्यवस्था एवं समाज प्रभावित हुआ जिसका प्रभाव उपन्यासों पर भी दिखाई पड़ता है। भूमंडलीकरण से उपजी स्थितियों और विद्रूपताओं से समाज में आये बदलाव उपन्यासों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ते हैं। जिनका विवेचन इस उपअध्याय में किया गया है।

इस प्रकार द्वितीय अध्याय के अंतिम उपअध्याय के अन्तर्गत हिन्दी उपन्यास के विकास को 1877 से लेकर 21वीं सदी के प्रथम दशक की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं के आधार पर संक्षेप में विश्लेषित किया गया है। उपन्यासों की एक लम्बी परम्परा को प्रमुख उदाहरणों द्वारा व्याख्यायित करना इस उपअध्याय लक्ष्य रहा है।

समाज से उपन्यास के संबंध के विविध स्तर और रूप है। उपन्यास में सामाजिक चेतना विचारधारा आदि की खोज होती रही है।

तृतीय अध्याय– 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में विविध आयाम : समाजशास्त्रीय अध्ययन। इस अध्याय में मैंने आधार ग्रन्थों के आधार पर समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है। समय और समाज दोनों में परिवर्तनशीलता एक सामान्य प्रवृत्ति है। समाज में कोई भी परिवर्तन किसी निश्चित तिथि या समय पर नहीं होता बल्कि वर्तमान परिस्थितियों के मूल में भूतकाल की स्थितियाँ काम कर रही होती हैं तो वहीं भविष्य वर्तमान से प्रेरित होता है। किसी भी परिवर्तन के पीछे वर्षों पुरानी स्थितियाँ भूमिका का सृजन कर रही होती हैं। 21वीं सदी के उपन्यास की चुनौतियाँ 20वीं सदी के साहित्य (उपन्यास) से बिल्कुल अलग है ऐसा कहना पूरी तरह तर्क संगत नहीं है। 21वीं सदी सूचना–संचार, प्रौद्योगिकी की अतिशयता की सदी है जिसने भारतीय समाज के संरचनात्मक ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन उत्पन्न किया है। 21वीं सदी के उपन्यासों में कथ्य की विस्तृत निर्मिति आश्चर्यचकित करती है। आज उपन्यास समाज के हर वर्ग, क्षेत्र से जुड़कर अपने कथ्य को विस्तार दे रहा है।

इस अध्याय में 21वीं सदी के प्रमुख उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन उनमें निहित आयामों के आधार पर किया गया है। 21वीं सदी के भाग दौड़ भरे जीवन, भूगोलीकरण के प्रभाव और युवाओं के पलायन की प्रवृत्ति को रेखांकित करने के साथ ही भारतीय समाज की गंगा–जमुनी

संस्कृति को परत–दर–परत खोलने, मानवीय रिश्तों की बुनावट को भाषा के एहसास के माध्यम से नासिरा शर्मा द्वारा लिखा 'पारिजात' उपन्यास बख़ूबी व्यक्त करता है। भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृतियों के द्वंद्व को भी स्वर प्रदान करता है।

उपन्यास सत्य को उसके सतही रूप में ग्रहण न करके उसके आन्तरिक रूप का उद्‌घाटन करता है। यह प्रवृत्ति 21वीं सदी के उपन्यासों में साफ तौर पर देखी जाती है। 'अरण्य तंत्र' एवं 'फाँस' उपन्यास में निहित सामाजिक यथार्थबोध' उपअध्याय में इसका अंकन किया गया है। समाज की वास्तविक स्थिति व परिस्थिति का चित्रण सामाजिक यथार्थवाद कहलाता है। अरण्य तंत्र उपन्यास में सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक कारणों से उपजी स्थितियों और प्रशासनिक विरूपताओं से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिससे सामाजिक यथार्थ के विविध स्तरों की तलाश की गयी है। उदारीकरण के चलते विकास के अविवेकपूर्ण मॉडल से पूरे देश के किसानों में आयी विसंगतियों का यथार्थ संजीव के 'फाँस' उपन्यास के माध्यम से सामने आया है। पिछले दो दशकों में बढ़ रही किसानों की आत्महत्या को आधार बनाकर लिखे गये इस उपन्यास में किसानों के जीवन की त्रासदी की समाजशास्त्रीय पड़ताल करने के साथ ही उसके सामाजिक यथार्थ को रूपायित करने का प्रयास किया गया है।

21वीं सदी के उपन्यासों में बाजारवादी संस्कृति, उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव को 'पागलखाना उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया गया है। भूमंडलीकृत होती संस्कृति में समाज का प्रत्येक वर्ग, बाजारवाद के प्रभाव से किस प्रकार पागल हुआ जा रहा है, इस बात को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बाज़ारवादी व्यवस्था हमारी सामाजिक व्यवस्था के प्रतिकूल होते हुए भी हर व्यक्ति को अपने अनुकूल बना बैठी है। यहाँ हर मूल्य, नैतिकता, रिश्ते, ज्ञान, ईश्वर तक बाजारवादी व्यवस्था के अंग बन चुके हैं। खान–पान, भाषा, आचार, विचार, साहित्य भी बाजार की मायावी दुनिया में खोते जा रहे हैं। इस विषम स्थिति से उपजी संस्कृति का समाजशास्त्रीय आलोक में अध्ययन किया गया है।

एक तरफ जहाँ आज के हिन्दी उपन्यासों में महानगरीय जीवन को मुख्यतः कथ्य के केन्द्र में रखा जा रहा है वहीं नीलेश रघुवंशी कृत 'एक कस्बे के नोट्स' में मध्यमवर्गीय कस्बाई जीवन को आधार बनाया गया है। 21वीं सदी में आधुनिकता की आँधी से अभी भी जो समाज बचा हुआ है वहाँ के बदलते लोक और समाज का चित्रण लेखिका ने किया है। यह उपन्यास एक तरह का नया प्रयोग कहा जा सकता है जो संघर्षरत लोक का स्वरूप पूरे यथार्थ रूप में उजागर करता है।

'निर्वासन' उपन्यास का सामाजिक अध्ययन तृतीय अध्याय का अन्तिम उपअध्याय है जिसके माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि विकास की दौड़ और भौतिकता की आँधी में यांत्रिक जीवन जीने

को मजबूर व्यक्ति किस प्रकार समाज में संवेदनाओं और मूल्यों से कटा जा रहा है और रिश्तों तथा सामाजिक व्यवस्था से निर्वासित महसूस कर रहा है। समय, समाज और भावनाओं की बेदखली को इस उपअध्याय में देखा गया है और निर्वासन के मूल में औपनिवेशिक मानसिकता निहित है जो हर वर्ग के लिये अलग–अलग रूपों में दिखाई देती है। ऐसा पाया गया कि निर्वासन उच्च वर्गों के लिये उपहार है तो निम्न वर्गीय जीवन के लिये कांटों का द्वार है।

चतुर्थ अध्याय '21वीं सदी के विमर्श मूलक हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन' के अन्तर्गत विविध विमर्शों–स्त्री, दलित आदिवासी, वृद्ध एवं तृतीयलिंगी आदि विमर्शों पर केन्द्रित उपन्यासों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन किया गया है तथा प्रत्येक विमर्श के तात्पर्य और स्वरूप का विवेचन प्रथम दृष्टया किया गया है। उत्तर आधुनिक विचारधारा में हमें समग्रता का विरोध दिखाई देता है जैसे– विचारधारा का अन्त, महावृतान्तों का अन्त जिससे समाज की स्थिरता भंग हुई और वृहद समाज की जगह छोटे–छोटे अस्मिता समूहों का उदय हुआ और सदियों से चली आ रही सामाजिक व्यवस्था में मुख्य धारा से अलग बहिष्कृत जीवन जीने को अभिशप्त लोगों में अपने अस्तित्व के प्रति चेतना जागी जिससे विविध विमर्शों का उदय हुआ। इस तथ्य को अध्याय के आरम्भ में व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है।

'स्त्री विमर्श' का तात्पर्य पुरुष सत्ता का विरोध करना नहीं अपितु अपने अस्तित्व 'मैं भी मनुष्य हूँ' अन्य मनुष्यों की तरह मुझे थी समाज में सम्मान पूर्वक रहने का अधिकार है। समाज के किसी भी क्षेत्र में चाहे वह राजनीति, शिक्षा, सामाजिक व्यवस्था आदि पर स्त्री का भी पुरुष के बराबर हक़ है। इन बिन्दुओं को 'तुम्हें बदलना ही होगा', और 'फरिश्ते निकले' स्त्री विमर्श केन्द्रित उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। साथ ही इसमे ंदलित विमर्श के तात्पर्य को स्पष्ट किया गया है 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में दलित विमर्श के बदलते स्वरूप का अध्ययन किया गया है। दलितों को अपनी सामाजिक स्थिति सुधार करने का सही मार्ग भी दिखाया गया है। जिसमें मुख्य रूप से शिक्षा और अन्तर्जातीय विवाह को एक माध्यम माना गया है।

इस अध्याय का तीसरा उपअध्याय आदिवासी विमर्श पर केन्द्रित है। भूमण्डलीय स्थितियों, तकनीकि एवं विकास की अतिशयता व राजनीतिक विसंगतियों से समाज का आदिवासी समुदाय सबसे अधिक दंश झेलने को अभिशप्त है। आदिवासी जीवन की विसंगतियों को सामने लाने के साथ ही 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' और 'गायब होता देश' उपन्यासों द्वारा आदिवासी जीवन में व्याप्त समस्याओं में सुधार का प्रयास भी दिखाई देता है।

'चार दरवेश' उपन्यास के माध्यम से वृद्ध विमर्श की विवेचना की गई है। पिछले एक–डेढ़ दशक में भूमण्डलीकरण और बाज़ारवादी व्यवस्था

ने जिस रूप में हमारे नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को परिवर्तित किया है उससे हमारे चिंतन का स्तर भी काफी प्रभावित हुआ है। प्राचीन भारतीय समाज में परिवार के स्वरूप में और 21वीं सदी में परिवार के स्वरूप में आये परिवर्तनों से वृद्धों के जीवन में किस प्रकार की विसंगतियों ने कदम बढ़ाये हैं यह इस उपन्यास में बारीकी से वर्णित हुआ है।

21वीं सदी के पिछले एक डेढ़ दशकों में विभिन्न अस्मिता समूहों से जुड़े विमर्श साहित्य के केन्द्र में आये हैं। जिनमें से थर्ड जेन्डर विमर्श भी एक महत्वपूर्ण विमर्श का रूप ले चुका है। अन्य विमर्श के केन्द्र में जहाँ अपने अस्तित्व की रक्षा का सवाल है वहीं थर्ड जेन्डर विमर्श तो अपने को मनुष्य या इंसान साबित करने के लिए संघर्षरत दिखाई दे रहा है। तथाकथित सभ्य समाज द्वारा स्त्री पुरुष के अतिरिक्त तृतीयलिंगी व्यक्ति को समाज, परिवार द्वारा कितनी अमानवीयता से बष्कृित कर अभिशप्त जीवन–जीने के लिये मजबूर किया जा रहा है और उनके हक़ से दया, ममता करूणा, संवेदना पूरी तरह से छीन ली जाती है। इस तथ्य को बहुत मार्मिक और सुधारवादी नवीन दृष्टि से चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में व्यक्त किया है। इस उपन्यास का समाजशास्त्रीय दृष्टि से विवेचन इस उपअध्याय में किया गया है।

अंतिम अध्याय '21वीं सदी के विवेच्य हिन्दी उपन्यासों का कथायगत एवं शिल्पगत विश्लेषण' के अन्तर्गत आरम्भिक उपन्यास से

लेकर 21वीं सदी तक आते–आते हिन्दी उपन्यासों में परिवेशगत परिवर्तित होती स्थितियों, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवर्तन से हिन्दी उपन्यासों में विषयगत वैविध्य दिखाई देता है। जिससे उपन्यासों के कथ्य और शिल्प में भी बदलाव नज़र आता है। कहीं–कहीं तो कई उपन्यास विधागत बुनावट को तोड़कर बहुआयामी बुनावट और उद्देश्य वाले दिखाई दे रहे हैं।

21वीं सदी के उपन्यासों में भाषिक संरचना में यह साफ झलकता है कि उपन्यास में भाषायी शुचिता कि केवल परिनिष्ठित संस्कृतिनिष्ठ तत्सम बहुल भाषा का प्रयोग हो, कि धारण बदल चुकी है। कथा भाषा जीवन के निकट की भाषा है जिसका उद्देश्य सरलता व सम्प्रेषणीयता है। भाषा–शैली, कथ्य की परिभाषाओं को विवेचित करने के साथ ही उपन्यासों में प्रयुक्त शैलियों और भाषाओं का उदाहरण देते हुए स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। उपन्यासों में प्रयुक्त संवादात्मक, व्यंग्यात्मक पत्रात्मक और विवेचनात्मक शैलियों का प्रयोग भी इस अध्याय के अन्तर्गत किया गया है। जिससे उपन्यास की कथ्यगत एवं शैलीगत विशेषताओं का सटीक वर्णन हुआ है।

उपसंहार के रूप में भविष्य के प्रति उपन्यास की आस्था और विश्वास का प्रतिपादन किया गया है। उपन्यासों अनिवार्यतः सामाजिक संघर्षों, जटिलताओं, आकांक्षाओं समस्याओं एवं अन्तर्विरोधों का प्रस्तुतीकरण कलात्मक ढंग से किया है। इसके अन्तर्गत सामाजिक व्यवस्था में घटित

तमाम समस्याओं का उद्घाटन करता है। आज समाज में भूमण्डलीकरण, बाजारवाद के घोर अवसाद से मनुष्य अपना जीवन जीने को मजबूर है। उपन्यास समाज के एक मार्गदर्शक के रूप में सामने आता है। अतः आज उपन्यास एक नयी दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। 21वीं सदी के चयनित उपन्यासों में समाज को एक दिशा देने की शक्ति किसी न किसी रूप में अवश्य निहित है। सामाजिक गतिशीलता को विवेचित करने के साथ ही यह सभी उपन्यास समाज के हर वर्ग में एक चेतना जगाने का कार्य करते हुए अपनी उपादेयता सिद्ध करने में सफल है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' के अन्तर्गत सन् 2011–2020 तक के उपन्यासों में सामाजिक आधारभूमि के परिप्रेक्ष्य में आकलन किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रन्थ

1. अखिलेख, निर्वासन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2016
2. गोविन्द मिश्र, अरण्य–तंत्र, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013
3. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण, 2020
4. नीलेश रघुवंशी, एक कस्बे के नोट्स, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2013
5. नासिरा शर्मा, पारिजात, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2019
6. महुआ माजी, मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2019
7. मैत्रेयी पुष्पा, फरिश्ते निकले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2016
8. रणेन्द्र, गायब होता देश, पेंगुइन बुक्स, शाहदरा दिल्ली, प्रथम संस्करण 2014
9. रजनी गुप्त, ये आम रास्ता नहीं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013
10. संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2016
11. सुशीला टाकभौरे, तुम्हें बदलना ही होगा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017
12. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2013

13. ज्ञान चतुर्वेदी, पागलखाना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2020

सहायक ग्रंथ

1. अवधेश कुमार सिंह, पुस्तक साहित्य की समीक्षा, लेख उत्तरआधुनिक, उत्तर उपनिवेशवाद और भारतीय आलोचना, डी.के. प्रिंटर्स प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण 2012

2. अरुण प्रकाश, उपन्यास के रंग, अन्तिका प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2013

3. अज्ञेय, आत्मनेपद, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण, 2003

4. अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण, 2014

6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, रसमीमांसा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

7. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2005

8. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

9. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य का मर्म, लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2014

10. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हमारी साहित्यिक समस्यायें, अभिनव प्रकाशन, पटना बिहार, संस्करण, 1957

11. आनन्द श्रीवास्तव, काशी का अस्सी एक मूल्यांकन, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, संस्करण, 2013

12. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण,

13. आर.के. प्रभु तथा यू.आर.राव, महात्मा गांधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, संस्करण, 2002

14. ओम प्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2019

15. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2008

16. काशीनाथ सिंह, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2004

17. इलाचन्द्र जोशी, विवेचना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण 2007

18. गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2015

19. गोविंद मिश्र, साहित्यकार होना, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, पटना बिहार, संस्करण, 2014

20. चन्द्रमौलेश्वर प्रसाद, वृद्धावस्थाविमर्श, प्रलेखन प्रकाशन, नजीबाबाद, संस्करण, 2016

21. चित्रा मुद्गल, आवां, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1995

22. जयप्रकाश कर्दम, रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2018

23. जी.के. अग्रवाल, समाजशास्त्रीय चिंतन के आधार, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2011

24. जैनेन्द्र, साहित्य का श्रेय और प्रेय, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1976

25. जैनेन्द्र, परख कुछ शब्द, प्रकाशन हिन्दी बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण, 2011

26. जे.पी. सिंह, समाजशास्त्र : अवधारणाएं एवं सिद्धांत, पी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण, 2013

27. डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2014

28. डॉ. ई. विजयलक्ष्मी, उपन्यासों के सरोकार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2008

29. डॉ. इन्दिरा जोशी, हिन्दी उपन्यासों में लोकतत्व (प्रथम खण्ड) सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 1965

30. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2016

31. डॉ. गोरखनाथ तिवारी, अन्तिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश

32. डॉ. चातक एवं प्रो. राजकुमार शर्मा, हिन्दी साहितय का इतिहास, कालेज बुक्स डिपो, जयपुर राजस्थान

33. डॉ. चन्द्रकांत बांदिवडेकर, हिन्दी उपन्यास स्थिति और गति, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1977

34. डॉ. जवाहर सिंह, हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प–विधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण, 1986

35. डॉ. नगेन्द्र, साहित्य का समाजशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण, 1982

36. डॉ. नवनीत आर. ठक्कर, हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यास द्वितीय खण्ड, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2000

37. डॉ. नित्यानंद तिवारी, साहित्य का स्वरूप नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, नई दिल्ली, संस्करण, 1985

38. डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का स्वरूप, अमर प्रकाशन, मथुरा, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2004

39. डॉ. एम. झाडे, अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास, अमन प्रकाशन, इलाहाबाद, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 1996

40. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2014

41. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2015

42. डॉ. प्रताप नारायण टण्डन, हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास

43. डॉ. बच्चन सिंह, बदलते यथार्थ की कहानी, पुस्तक–कहानी के नये प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2005

44. डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2016

45. डॉ. बच्चन सिंह, साहित्य का समाजशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2012

46. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2014

47. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण, 2014

48. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

49. डॉ. रामदरश मिश्र, आज का हिन्दी साहित्य : संवेदना और दृष्टि, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 1975

50. डॉ. राजमणि शर्मा, आधुनिक भाषा विज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

51. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2014

52. डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान, उपन्यास–स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य, ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली, संस्करण, 1999

53. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य–बीसवीं शताब्दी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जनकपुरी, संस्करण, 1999

54. डॉ. ललित श्रीमाली, भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास, ज्योति पर्व प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2014

55. डॉ. लाजपतराय, बीसवीं शताब्दी के हिन्दी नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन कल्पना प्रकाशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 1974

56. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, संस्करण 2015

57. डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारतीय भवन पब्लिकेशन्स, पटना, बिहार, संस्करण, 2018

58. डॉ. विश्वम्भरदयाल गुप्त, उपन्यास का समाजशास्त्र, श्री पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण, 1979

59. डॉ. शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ, विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 1987

60. डॉ. शोभा पाण्डेय, आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में आधुनिकता बोध, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2017

61. डॉ. श्यामसुन्दरदास, साहित्यालोचन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2017

62. डॉ. शशिभूषण सिंह, हिन्दी उपन्यास यात्रा, गाथा...

63. डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र, इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास, विकास प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2020

64. डॉ. सुदेश बत्रा, नारी अस्मिता–हिन्दी उपन्यासों में, रचना प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान, संस्करण, 2012

65. डॉ. सुवास कुमार, प्रशासन पुराण (लेख) गोपाल चतुर्वेदी, उपन्यासकार, गोविन्द मिश्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2008

66. डॉ. संजय गौड़, आधुनिक महिलायें और समाज, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण, 2004

67. डॉ. श्रीनारायण समीर, हिन्दी आकांक्षा और यथार्थ, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2012

68. डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2018

69. तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड 398/4, गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2015

70. देवेन्द्र चौबे, आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श, ओरियन्ट ब्लैक स्वान, नई दिल्ली, संस्करण, 2009

71. नामवर सिंह, दूसरी परम्परा की खोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2020

72. नागार्जुन, बलचनामा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2003

73. नागार्जुन, बाबा बटेसरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

74. नवल किशोर, आधुनिक हिन्दी उपन्यास में मानवीय अर्थवत्ता, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण, 1975

75. नासिरा शर्मा, कुइंयाँजान, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

76. पुष्पपाल सिंह, भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2012

77. पुष्पपाल सिंह, 21वीं सदी का हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016

78. परमानन्द श्रीवास्तव, उपन्यास का पुनर्जन्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2015

79. पूरनचंद जोशी, परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2009

80. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016

81. प्रो. प्रमोद कोवप्रत, इक्कीसवीं शती के हिन्दी उपन्यास, अमन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2018

82. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', नई कहानी के विविध प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2014

83. प्रो. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2019

84. प्रेमचंद, प्रेमचंद कुछ विचार, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण, 2011

85. प्रेमचंद साहित्य का उद्देश्य, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2015

86. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (भूमिका), संस्करण, 1984

87. बी.के. नागला, भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2015

88. बी.एन. सिंह, जनमेजय सिंह, नगरीय समाजशास्त्र, रावत बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण, 2015

89. भगीरथ मिश्र, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2015

90. भगवतीचरण वर्मा, साहित्य के सिद्धांत तथा रूप, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2000

91. मधुकर सिंह, कमलेश्वर की भूमिका, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 1994

92. मैनेजर पाण्डेय, उपन्यास और लोकतंत्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

93. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, संस्करण, 1989

94. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2018

95. मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट (भूमिका में राजेन्द्र यादव का वक्तव्य) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

96. राजेन्द्र यादव, उपन्यास स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2020

97. राम बिहारी सिंह तोमर, समाजशास्त्र के मूल तत्व, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, राजस्थान, संस्करण, 2012

98. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016

99. राजेन्द्र यादव, एक दुनिया समानान्तर (भूमिका) राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

100. राजेन्द्र सिंह चौहान, मालती जोशी का कथात्मक साहित्य, समथा प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2005

101. राम आहूजा : मुकेश आहूजा, समाजशास्त्र विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान, संस्करण, 2008

102. रैल्फ फाक्स भूमिका रामविलास शर्मा, उपन्यास और लोक–जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2015

103. विनोद विश्वकर्मा, हिन्दी उपन्यास और आदिवासी चिंतन, अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2015

104. वीरेन्द्र जैन, डूब, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1998

105. विभूतिनारायण राय, साम्प्रदायिक दंगे और भारतीय पुलिस, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016

106. वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, समाजशास्त्र का विश्वकोश, रावत प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान, संस्करण, 2002

107. शंभुनाथ, हिन्दी उपन्यास राष्ट्र और हाशिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016

108. श्यामाचरण दुबे, परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2008

109. शिवरानी बुहाल, दलित लेखन में स्त्री चेतना की दस्तक, अक्षर शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2017

110. शिव कुमार मिश्र, यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2017

111. शिवपूजन सहाय, देहाती दुनिया (भूमिका), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1994

112. सुमित्रानंदन पंत, गद्य पथ, हिन्दी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 1953

113. सं. विमलेश क्रांति वर्मा, भाषा साहित्य और संस्कृति, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण, 2009

114. सुरेन्द्र वर्मा, मुझे चाँद चाहिए, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2006

115. सं. चंद्रकांत वांदिवडेकर, नेमिचन्द्र जैन छोटी दुनिया और भाषा की तीखी तराश, गोविन्द मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

116. सं. चंद्रकांत वादिवडेकर, गोविन्द मिश्र सृजन के आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

117. सं. संजय नवले, किसान आत्महत्या यथार्थ और विकल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

118. रमणिका गुप्ता, आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2002

119. संजीव कुछ तो होना चाहिए न (लेख) पुस्तक–संजीव की कथागत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

120. सं. मनोहर लाल, वीरेन्द्र जैन का साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1997

121. सं. ओमप्रकाश सिंह शीतांशु, उपन्यास का वर्तमान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण, 2018

122. सं. कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्श विविध पहलू, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 2012

123. सं. शरद सिंह, थर्ड जेन्डर विमर्श, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2020

124. सन्दीप रणभिरकर, आधुनिकता बोध और उषा प्रियंवदा, अमन प्रकाशनन, कानपुर, संस्करण, 2015

125. हेमन्त कुकरेती, हिन्दी उपन्यास : नया पाठ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2020

अंग्रेजी ग्रंथ

1. आगबर्न एण्ड निमकॉफ, ए हैण्डबुक ऑफ सोशियोलॉजी, राउटलेज एण्ड, केगनवॉल लि., लंदन, संस्करण, 2011

2. जॉन डब्ल्यू बेनेट, सोशल लाइफ स्ट्रक्चर एण्ड फंक्शन अ इन्डोडक्ट्री जनरल सोशियालॉजी, फारगेटन बुक्स, संस्करण, 2018

3. जे. टामिलिनसन, ग्लोबलाइजेशन एण्ड कल्चर, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो, संस्करण, 1999

4. डेविड लॉज, टेवेन्टीथ सेन्चुरी क्रिटिसिज्म, लागमैन पब्लिकेशन, लंदन, संस्करण, 1959

5. डी.डी. कौसाम्बी, एग्जासपरेटिंग एसेज, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण, 1957

6. डी.पी. मुखर्जी, डाइवर्सिटीज : एसेस इन इकोनामिक्स सोशियोलॉजी एण्ड अदर सोशल प्राब्लम्स, पीपुल्स पब्लिकेशन कम्पनी, नई दिल्ली, संस्करण, 1958

7. पी.डब्ल्यू ग्रीन, सोशियोलॉजी : एन एनालिसिस ऑफ लाइफ इन मॉडर्न सोसाइटी, एम.सी.ग्रा. हिल पब्लिशरण, न्यूयार्क, संस्करण, 1972

8. मैकाइवर एवं पेज, सोसाइटी एण्ड इन्ट्रोडक्टरी एनलिसिस प्रीफेस, लक्ष्मी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2007

9. एम.सी. अलब्रेच्ड एण्ड अक्षर, सोशियोलॉजी ऑफ आर्ट एण्ड लिटरेचर, हेराल्ड डयूकवर्थ एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लंदन, संस्करण, 2014

10. राबर्ट स्कॉरपिट, सोशियोलॉजी ऑफ लिटरेचर, फैक केस पब्लिशर, लंदन, संस्करण, 1971

11. रोमिला थापर, सोशल साइटिस्ट (जनरल)

शब्द कोश

1. द ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी वाल्यूम–XI क्लारेण्डन प्रेस, संस्करण, 1989

2. नवल, नालन्दा विशाल शब्द सागर, आदिशा बुक डिपो, नालंदा संस्करण, 2012

3. राजपाल हिन्दी शब्द कोश, हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, संस्करण, 2007

4. हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञान मण्डल प्रकाशन, बनारस, उत्तर प्रदेश, संस्करण, 1979

पत्र–पत्रिकाएँ

1. अमर उजाला (अखबार) – 2019

2. अनुसंधान (त्रैमासिक पत्रिका) सं. डॉ. सगुफ्ता नियाज

3. आलोचना – अंक 14–15 (जनवरी)

4. कृति, सं. त्रिभुवन सिंह, विजयेन्द्र स्नातक

5. कथाक्रम, जून–2014

6. जनसत्ता (अखबार) दिसम्बर 2015, जुलाई–2014

7. जनपथ, पत्रिका, अंक–1

8. दैनिक ट्रिब्यून, जुलाई, 2018

9. नवभारत टाइम्स, प्रभात रंजन, दिसम्बर, 2015

10. पूर्वग्रह, अंक 58

11. बयाँ, 2006

12. मधुमती प्रकाशन, 2007

13. संवेद, अंक जनवरी 2013

14. सिद्धांत कौमुदी, वैकटेश्वर प्रेम मुम्बई, 1989

15. समीक्षा, अंक दो, 2014

16. हिन्दुस्तान समाचार (दैनिक समाचार पत्र), जुलाई, 2017

17. हंस, जून, 2009

18. हिन्दी अनुशीलन (त्रैमासिक), 2011

19. हिन्दी प्रदीप, बालकृष्ण भट्ट, जुलाई, 1881